(1)

B.A. History Hon's Part-II

Paper: III, Unit: II Date: 7.10.2020 Lecture No. 9

Lession: फिरोज शाह तुगलक की उपलब्धियाँ

फिरोज सुल्तान गियासुद्दीन तुगलक के छोटे भाई रज्जब का पुत्र था। उसका जन्म 1
ई० में हुआ। फिरोज को शिक्षा का अच्छा प्रबन्ध किया गया परन्तु वह योग्य न हो
परन्तु मुहम्मद तुगलक अपने इस भाई से विशेष प्रेम करता था। फिरोज के शासन
महत्वपूर्ण पद प्राप्त होते रहे। जिस समय मुहम्मद तुगलक की मृत्यु हुई उस अवस
पर फिरोज उसके साथ था। सरदारों के कहने से 23 मार्च 1351 ई० में फिरोज सिंहा
पर बैठना स्वीकार कर लिया और सुल्तान बना। राज्य के कर्ज को चुका दिया
वजीर-ए-ख्वाजा-जहाँ ने अपने पक्ष को दृढ़ करने के लिए जिस सम्पत्ति को
विभिन्न व्यक्तियों को दे दिया था उसे उनसे छीनने का प्रयास नहीं किया और इस्ला
के कानूनों के अनुसार शासन करने का आश्वासन दिया।

• राजस्व व्यवस्था: फिरोज ने इस्लामी कानून द्वारा स्वीकृत केवल चार कर लगाये-ख
(लगान), खम्स (युद्ध में लूटे धन का 1/5 भाग), जजिया (हिन्दुओं का धार्मिक कर) और जकात (आय
2%. जो मुसलमान से लिया जाता था और उन्हीं के लिए व्यय कर दिया जाता था। जजिया
उसने हिन्दू ब्राह्मणों से भी लिया था। उलेमा-वर्ग की स्वीकृति के पश्चात् सिंचाई कर
लगाया। किसानों को सिंचाई के लिए शाही नहरों का पानी प्रयोग में लाते थे, अपनी पैद
का 1/10 भाग सरकार को देना पड़ता था। फिरोज ने अपने समय में प्राय: 24 कष्टदायक
करों को समाप्त किया। उसके समय में लगान पैदावार 1/5 से 1/3 भाग था। ख्वाजा
हिसामुद्दीन विभिन्न सूबों का दौरा करके छ: वर्ष के परिश्रम के पश्चात् खालसा भू
से छ: करोड़ पचासी लाख टका का लगान निश्चित से किया। सुल्तान ने प्राय: 200
के बाग लगवाये जिससे कृषि के उत्पादन और कृषियोग्य भूमि में वृद्धि हुई।
फिरोज ने कर्मचारियों के वेतन में वृद्धि की, उन्हें उनके कार्य क
बदले में जागीरें दी। सूबेदारों को यातनाएँ देकर उनसे ठीक हिसाब लेने की प्र
को समाप्त कर दिया और सुल्तान को भेंट देने की प्रथा को भी समाप्त कर दि
किसानों को राज्य से लिये गये तकावी-ऋण से भी मुक्त कर दिया गया। फिर
ने विभिन्न आन्तरिक व्यापारिक करों को भी समाप्त कर दिया जिससे वस्तुओं
मूल्य में कमी हुई और व्यापार की प्रगति हुई। फिरोज के राजस्व सम्बन्धी सु
भी लाभदायक हुए। फिरोज के समय में कोई अकाल नहीं पड़ा, जनता धनवान हु
और वस्तु के मूल्य कम रहे। इतिहासकारों ने "जीवन की आवश्यकताएँ प्रचुर मात्रा में
उपलब्ध थी और फिरोज के सम्पूर्ण शासन काल में बिना किसी प्रयत्न के अनाज
मूल्य अलाउद्दीन खिलजी की भाँति सस्ते रहे।"

•• सिंचाई व्यवस्था: सिंचाई की सुविधा के लिए फिरोज ने पाँच बड़ी नहरों का निर्माण
कराया। इनमें से एक 150 मील लम्बी नहर यमुना नदी से हिसार तक बनाई गई
दूसरी 96 मील लम्बी नहर सतलज से घग्घर तक जाती थी। तीसरी नहर सिरमोर
पहाड़ियों के निकट से आरंभ होकर हाँसी तक जाती थी। चौथी नहर घग्घर से फिरोजा
शहर तक और पाँचवीं यमुना से फिरोजाबाद तक जाती थी। इन नहरों के कारण कृ
योग्य भूमि में वृद्धि हुई व्यापारिक सुविधाएँ बढ़ी और सिंचाई कर के रूप में राज्य
आय में वृद्धि हुई। फिरोज ने सिंचाई और यात्रियों की सुविधा के लिए 150 कुएँ खुदव
विभिन्न नदियों पर 50 बाँध और 30 झील का निर्माण कराया था।

••• नहर और सार्वजनिक निर्माण कार्य: फिरोज शाह ने 300 नवीन नगरों का निर्माण कराय
उसके द्वारा बसाये गए नगरों में फतेहाबाद, हिसार, फिरोजपुर, मीरजापुर, जौनपुर और
फिरोजाबाद प्रमुख थे। यमुना नदी के तट पर बनाया गया दिल्ली का लाल किला

आधुनिक फिरोज कोटला कहलानेवाला फिरोजाबाद नगर फिरोज को बहुत प्रिय था और वह अक्सर वहाँ रहता था। फिरोज ने 40 मस्जिद, 30 विद्यालय, 20 महल, 100 सराएँ, 200नग 100 अस्पताल, 5 मकबरे, 100 सार्वजनिक स्नान-गृह, 10 स्तम्भ, 450 पुल आदि का निर्माण कराया था। फिरोज ने दिल्ली की जामा मस्जिद, कुतुबमीनार, शम्सी-तालाब, अलाई-तालाब, जहाँपनाह, इल्तुतमिश का मदरसा, आदि की समाधियों की मरम्मत करायी।

:: परोपकार के कार्य: फिरोज मुसलमान सन्तों और धार्मिक व्यक्तियों को जागीरें व सम्पत्ति दान करता था। उसने एक विभाग दीवान-ए-खैरात स्थापित किया था जो मुसलमान लड़कियों के विवाह की व्यवस्था करता था।

:: न्याय: फिरोज की न्याय-व्यवस्था इस्लाम के कानूनों पर आधारित थी। मुहम्मद तुगलक के सच्चाई को जानने के लिए व्यक्तियों को जो यातनाएँ दी जाती थीं उन्हें समाप्त कर दिया।

:: शिक्षा: फिरोज स्वयं विद्वान था और विद्वानों का सम्मान करता था। बरनी ने 'फतवा-ए-जहाँदारी' और 'तारीख-ए-फिरोजशाही' की रचना की। उसने प्रायः 13 मदरसे स्थापित किया जिसमें से तीन श्रेष्ठ स्तर के विद्यालय थे। अफीफ के कथनानुसार सुल्तान विद्वानों को सहायता के रूप में 36 लाख टका देता था।

:: दास: फिरोज को दासों का बहुत शौक था और उसके दासों की संख्या प्रायः 18,000 तक पहुँच गई थी। फिरोज का यह शौक राज्य के लिए हानिकारक सिद्ध हुआ। इससे शाही व्यय में अनावश्यक वृद्धि हुई और बाद में इन दासों ने राजनीति में हस्तक्षेप किया और तुगलक वंश के पतन के लिए उत्तरदायी हुआ।

:: सैन्य संगठन: फिरोज का सैन्य संगठन दुर्बल रहा। केन्द्र पर एक बड़ी स्थायी सेना न थी। अधिकांश सैनिकों को जागीरों के रूप में वेतन दिया जाने लगा। केन्द्र में 80 या 90 हजार की घुड़सवार सेना थी और शेष के लिए सुल्तान अपने अमीरों अथवा सरदारों की सेना पर निर्भर करता था। एक अवसर पर स्वयं सुल्तान ने एक सैनिक को एक टका इसलिए दिया कि वह इसे रिश्वत के रूप में सैनिक विभाग एक अधिकारी को देकर अपने घोड़े की स्वीकृति करा ले।

:: धार्मिक नेता: दिल्ली सुल्तानों में फिरोज पहला सुल्तान हुआ जिसने इस्लाम के कानूनों और उलेमा वर्ग को राज्य शासन में प्रधान प्रदान की। अन्य शासकों ने इस्लाम धर्म का समर्थन किया और अपने बहुसंख्यक हिन्दू प्रजा के प्रति उन्होंने सहिष्णुता की नीति अपनाई परन्तु उन्होंने शासन के सिद्धान्त के रूप में स्वीकार नहीं किया। उसमें केवल एक अन्तर रहा कि जबकि औरंगजेब स्वयं अपने को इस्लामी कानून में पारंगत मानता था, फिरोज इसके लिए उलेमा वर्ग की सलाह पर निर्भर करता था। सुल्तान शिया, सूफी मुल्हीदियों, महदवियों आदि मुसलमान वर्गों के प्रति असहिष्णुता था क्योंकि वे कट्टर सुन्नी मत के समर्थक न थे।

फिरोज अपनी बहुसंख्यक हिन्दू प्रजा के अत्यधिक कठोर रहा। उसने इस्लाम के प्रचार को अपना प्रमुख कर्तव्य माना और हिन्दुओं को मुसलमान बनने के लिए प्रोत्साहन दिये। जाजनगर पर आक्रमण करने के उसका मूल उद्देश्य वहाँ के हिन्दू मंदिरों को नष्ट करके, हिन्दुओं को मुसलमान बनाने अधिक किया है। डा० आर० सी० मजूमदार के मतानुसार फिरोज इस युग का सबसे महान धर्मांध और इस क्षेत्र में सिकन्दर लोदी तथा औरंगजेब का अग्रज था। उसकी कठोर नीति के कारण तुगलवंश का पतन प्रारंभ हो गया।

डा० शंकर जय किशन चौधरी
अतिथि शिक्षक, इतिहास विभाग
डी० बी० कॉलेज, जयनगर